राज्य में बकरियों के प्रचलित नस्ल

बकरी पालन एक लाभदायक व्यवसाय है। यह किसी भी स्थान में बिना पर्याप्त साधन के पाले जा सकते है। राज्य के ग्रामीण अपने खाली समय का उपयोग कर कम पूँजी से अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। यह पशुपालकों के लिए एक ATM की तरह है। बकरियों से प्राप्त दूध, मांस, चमड़ा के अलावा इनका मल–मूत्र भी (खाद के रूप में) उपयोगी है। प्रजनन एवं रोगों की रोकथाम भी आसान है।

नस्ल		प्राकृतिक वास	शारीरिक गठन	प्रमुख विशेषताएँ
ब्लैक बंगाल (मांस एवं चमड़ा हेतु उपयोगी)		प0 बंगाल, आसाम, बिहार एवं समस्त पूर्वांचल राज्यों (मणिपुर, त्रिपुरा, अरूणाचल प्रदेश, व मेघालय)	छोटा कद। रंग सामान्यतः काला किन्तु भूरे, उजले, हल्के लाल रंग में भी मिलते है। नर व मादा दोनों में ढाढ़ी होती है। सींग छोटे और उपर की ओर उठे हुए तथा कान छोटे और चपटे होते है।	वयस्क नर 32 कि0ग्रा0 एवं मादा 20 कि0ग्रा0। शरीर की ऊँचाई 58 से.मी. (नर) एवं 54 से.मी. (मादा) में। प्रजनन क्षमता काफी अच्छी।
जमुनापारी (दुग्ध एवं मांस दोनों के लिए उपयोगी)		उत्तर प्रदेश का इटावा क्षेत्र (यमुना व चम्बल नदियों के कछार)।	यह बड़े आकार की बकरी है। रंग सफेद एवं गले व सिर पर धब्बे भी पाये जाते है। इनकी उभरी नाक को रोमन नोज कहते है। इस पर बालों के गुच्छे होते हैं। कान लम्बे और लटके हुए होते है।	शरीर का वजन वयस्क नर में 50–60 किलो तक व मादा में 40–50 किलो तक। शरीर की ऊँचाई लगभग 80 से.मी. दुध उत्पादन एक दुग्ध काल (194 दिन) में 200 किलो ग्राम।
बारबरी (दुग्ध एवं मांस दोनों के लिए उपयोगी)		उत्तर प्रदेश के एटा, आगरा, अलीगढ व मथुरा जिला।	यह छोटे आकार की बकरी है। रंग सफेद तथा भूरा/सफेद धब्बों सहित। कान छोटे नुकीलें तथा सींग मध्यम तथा आगे या पीछे की ओर मुड़े होते है।	वयस्क नर का वजन 37 किलो तथा मादा का 22 किलो। शरीर की ऊँचाई 70 से.मी. (नर) तथा 58 से.मी. (मादा)। दुग्ध उत्पादन एक दुग्ध काल (152 दिन) में 95 किलो तक।

पशुधन का नहीं कोई धर्म, मानव सेवा है इनका कर्म।